शालिनी महाजन– शालिनी महाजन एक लेखक और सक्रिय कार्यकर्ता है। शालिनी ने पिछले पंद्रह वर्षों से अध्यापक तथा स्वतंत्र लेखक व शोधकर्ता के रूप में कार्य किया है। उन्होंने विद्यार्थियों तथा एनजीओ कार्यकर्ताओं के लिए जेन्डर और यौनिकता विषय पर अनेक कार्यशालाएं भी आयोजित की हैं। वे 1995 में स्थापित लेस्बियन्स एण्ड बाईसेक्सुअॅल्स इन एक्शन (लेबिया) नामक क्वीयर नारीवादी समूह की संस्थापक सदस्या हैं और मुम्बई के नारीवादी समूह, फोरम अगेन्स्ट ऑप्रेशन ऑफ विमैन की सक्रिय सदस्या हैं।

अनिता घई– डॉक्टर अनिता घई दिल्ली विश्वविद्यालय के जीसस एण्ड मैरी कॉलेज में मनोविज्ञान में ऐसोसीएट प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हैं। विकलांगता के क्षेत्र में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, यौनिकता एवं जेंडर विषयों पर अधिक काम किया है। 2003 में प्रकाशित (डिस) एम्बॉडेड फार्म : इश्यूज़ ऑफ डिसएबल्ड वूमैन उनकी दूसरी पुस्तक थी। वे रूलेज की विकलांगता एवं समाज, स्कैन्डिनिवियन जर्नल ऑफ डिसएबिलिटी एवं विकलांगता अध्ययन विषय पर प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका के संपादक मंडल की सदस्या हैं। अनेक पुरस्कारों और फैलोशिप्स ग्रहण कर चुकीं डॉक्टर अनिता घई ने कई सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों की कार्यकारिणी की सदस्या के रूप में काम किया है।

मीना सेशू– महाराष्ट्र में स्थित, संपदा ग्रामीण महिला संस्था (संग्राम) की संस्थापक तथा महासचिव हैं। यह संस्था यौनकर्मियों को एकत्र करने, अपने ग्राहकों के साथ कॉनड्म प्रयोग करने के लिए बातचीत करने तथा अपने अधिकारों की सुरक्षा एवं स्थापना करने के लिए उनकी क्षमता विकसित करती है। ह्यूमन राइट्स वॉच ने उन्हें सन् 2002 में मानव अधिकार रक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया है।

गौतम भान– एक लेखक और एक्टिविस्ट हैं जो शहरी विकास और बदलाव के मुद्दे पर लिखते और कार्य करते हैं। वो यौनिकता से जुड़े आंदोलन में बहुत सक्रिय रूप से कार्यत हैं।

शोहिनी घोष– शोहिनी जामिया मिलीया इस्लामिया (सेन्ट्रल विश्वविद्यालय, नई दिल्ली) के एजेके मास कम्युनिकेशन रिसर्च सेन्टर में डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हैं और वीडियो और टेलीविजन प्रोडक्शन पढ़ाती हैं। शोहिनी जेन्डर, यौनिकता तथा मीडिया के विषय पर भी पढ़ाती रही हैं। फिलहाल वे ऐमस्टरडैम के समर इन्स्टीट्यूट, क्रिया और तारशी द्वारा आयोजित यौनिकता और अधिकार इन्स्ट्रीट्यूट और अन्य समान कार्यक्रमों में पढ़ाती हैं। ये मीडियास्टोंम कलेक्टिव की सह संस्थापक हैं, जो भारत का पहला महिलाओं का डॉक्यूमेन्टरी प्रोडक्शन समूह है। उनकी पहली स्वतंत्र फिल्म 'टेल्स ऑफ दी नाइट फेरीज़' (2002) कलकत्ता के यौनकर्मियों के अधिकारों के संघर्ष पर आधारित है। वे मीडिया के क्षेत्र में विद्वान हैं और प्रचलित संस्कृति, विशेष करके फिल्मों और क्वीयर यौनिकता के विषयों पर व्यापक रूप से लिखती हैं।

सुमित बौद्ध– सुमित यौनिकता और कानून से जुड़े विषयों पर काम करते हैं। क्वीयर लोगों, दलितों और भारत के प्रवासी श्रमिकों के मानवाधिकारों पर काम करने में उनकी विशेष रूचि है। सुमित ने नैशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया से कानून की डिग्री प्राप्त की है और कानून के ही विषय में स्नातकोत्तर शिक्षा लंदन के लंदन स्कूल ऑफ इक्नॉमिक्स से प्राप्त की है। वे दिल्ली की बार काउन्सिल में अधिवक्ता और इंग्लैंड तथा वेल्स में नॉन प्रेक्टिसिंग सॉलीसिटर के रूप में पंजीकृत हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य अतिथि शिक्षकगण भी होंगे जो इन मुद्दों पर कार्य करते हैं और इन मुद्दों पर विशेष कार्य अनुभव रखते हैं।

क्रिया CREA

7, मथुरा रोड़, दूसरी मंजिल, जंगपुरा बी
नई दिल्ली – 110 014, भारत
फोन नं. 011 24377707, 24378700 फैक्सः 011 24377708
ई–मेलः crea@vsnl.net वेबसाईटः http://www.creaworld.org

यौनिकता, जेन्डर और अधिकार
-एक अध्ययन

‘यौनिकता, जेन्डर और अधिकार – एक अध्ययन’ क्रिया द्वारा संचालित महिला कार्यकर्ताओं के लिए एक सप्ताह का आवासीय अध्ययन कार्यक्रम है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में यौनिकता, अधिकार, जेंडर, स्वास्थ्य तथा सांस्कृतिक, सामाजिक और कानूनी मामलों के बीच के संबंध के बारे में जानकारी दी जाती है।

8–13 फरवरी, 2010
टेरी, गुड़गाँव

पाठ्यक्रम

‘यौनिकता, जेन्डर और अधिकार : एक अध्ययन’ एक सप्ताह का आवासीय प्रशिक्षण है जिसमें यौनिकता के सिद्धान्तों पर चर्चा की जाती है और यौनिकता, जेन्डर और स्वास्थ्य के अंतरसंबंधों पर गौर किया जाता है। यौनिकता का अध्ययन एक जटिल क्षेत्र है जो कई विषयों और कार्यक्षेत्रों के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिये इस कोर्स की विषय वस्तु भी यौनिकता की वैचारिक व सैद्धान्तिक अध्ययन पर आधारित होगी जो सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों और उनके आपसी संबंधों से जुड़ी हुई होगी। पढ़ाने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाएगा – जैसे क्लास रूम में विचार विमर्श, समूह कार्य, केस स्टडी, उत्प्रेरक अभ्यास, चर्चा कहानियां, फिल्में आदि।

इस पाठ्यक्रम को संचालित करने वाले समूह में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न मुद्दों पर कार्य करने वाले अनुभवी व्यक्ति शामिल होंगे जो ना सिर्फ इन मुद्दों पर कार्य करते हैं बल्कि जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इन मुद्दों को उजागर भी किया है। इस पाठ्यक्रम में सभी कार्यक्रम हिन्दी में होंगे जिसमें पढ़ाई, लिखाई, चर्चा, फिल्में आदि शामिल हैं। अतः प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाती है कि वे हिन्दी भाषा से भलीभाँति परिचित हों और उसे लिखना पढ़ना जानते हों, क्योंकि इसमें पढ़ने के लिए हिन्दी में सामग्री भी दी जाएगी

विषय वस्तु

यौनिकता और अधिकार
यौनिकता, जेन्डर और कानूनी व्यवस्था
यौन, प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकार
यौनिकता का प्रतिनिधित्व
यौनिक विभिन्नता और अधिकार
यौनिकता और विकलांगता
यौन कार्य, यौनिकता व अधिकार

आयोजक

क्रिया – दिल्ली में कार्यरत एक गैर सरकारी संस्था है, जिसकी स्थापना सन् 2000 में की गई थी। क्रिया का उद्देश्य महिलाओं की नेतृत्व क्षमता बढ़ाने के साथ यौनिकता, यौनिक तथा प्रजनन अधिकार, महिलाओं के प्रति हिंसा, मानव अधिकार और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए महिलाओं को अपने मानव अधिकारों की मांग करने तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाना है।

प्रतिभागी

इस पाठ्यक्रम के लिए वे सभी महिलायें आवेदन कर सकती हैं जो यौनिकता, स्वास्थ्य या जेन्डर के मुद्दों तथा मानव अधिकार के संदर्भ में महिलाओं के साथ कार्य कर रही हैं। आवेदन प्राप्त करने के बाद कुल 25 प्रतिभागियों को इस पाठ्यक्रम के लिए चुना जाएगा। सभी प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाती है कि पूरे पाठ्यक्रम के लिए वे आरंभ से अंत तक कार्यक्रम स्थल पर निवास करेंगे।

स्थान एवं शुल्क/व्यय

‘यौनिकता जेंडर और अधिकार – एक अध्ययन’ का आयोजन गुड़गाँव की टेरी (द एनर्जी एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट) संस्था में किया जा रहा है। सभी सहभागियों के प्रशिक्षण, रहने, खाने और यात्रा व्यय की व्यवस्था आयोजक की तरफ से की जाएगी।

शिक्षकगण

प्रमदा मेनन– एक क्वीयर नारीवादी कार्यकर्ता और स्वतंत्र सलाहकार के रूप में कार्य करती हैं। प्रमदा मेनन पिछले दो दशकों से भी ज्यादा समय से यौनिकता, यौन अधिकार, जेन्डर, महिलाओं के प्रति हिंसा, संस्थागत विकास और बदलाव और जीविका के मुद्दों पर कार्य कर रही हैं। ये क्रिया (अंतर्राष्ट्रीय महिला मानव अधिकार संस्था) की सह संस्थापक हैं और क्रिया में कार्यक्रम निर्देशिक के रूप में 2000 से 2008 तक कार्य किया है। क्रिया की सह संस्थापना करने से पहले उन्होंने दस्तकार (क्राफ्ट से जुड़े लोगों की जीविका के मुद्दे पर कार्य करने वाली संस्था) के एक्जेक्यूटिव डायरेक्टर के रूप में कार्य किया था।

एस विनिता– एस विनिता ने चिकित्सीय और मानसिक सामाजिक कार्यों में गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया था लेकिन अब वे मानवाधिकार विषयों पर सक्रिय रूप से क्रिया (अंतर्राष्ट्रीय महिला मानव अधिकार संस्था) में कार्य करती हैं। क्रिया में उनका दायित्व यौनिकता, जेंडर और अधिकार विषयों पर हिन्दी में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का और महिला अधिकारों के लिए काम करने वाले संगठनों में नारीवादी नेतृत्व का विकास करना है। इसके साथ विनीता एक तीन साल के दक्षिण ऐशिया के तीन देशों में चल रहे कार्यक्रम को सम्भाल रही है जो महिलाओं के विरूद्ध हिंसा पर केन्द्रित है।

शालिनी सिंह– सामाजिक विज्ञान की पृष्ठभूमि के साथ शालिनी एक वकील व प्रशिक्षित काउन्सलर हैं। महिला मुद्दों के क्षेत्र में बारह साल से कार्य करते हुए पिछले पांच साल से क्रिया (अंतर्राष्ट्रीय महिला मानव अधिकार संस्था) के समुदाय आधारित कार्यक्रम से जुड़कर शालिनी महिला हिंसा, जेन्डर, यौनिकता तथा महिलाओं से जुड़े कानून के मुद्दों पर प्रशिक्षण देने व लिखने का कार्य करती हैं।